महेश शर्मा

धार, मध्य प्रदेश

अस्थि विसर्जन

युं कहें कि सारा शहर उमड़ पड़ा था सेठ गोकुलप्रसाद की मृत्यु सुचना फैलते ही ,तो अतिशियोक्ति नहींहोगी। नाम ही कुछ ऐसा था ।शहर के गिने चुने रईसों मेंसे एक । ट्रान्सपोर्ट व्यवसाय में प्रसिद्धनाम । खुद के आठ दस वाहनों के अलावा अनुबन्धीत वाहनों की बडी संख्या से क्षैत्र में खासा दबदबा था । व्यवसाय के अलावा जमीन जायदाद भी खुब । दो बेटे निर्मल और सुरज के साथ मिलकर गोकुलप्रसाद रात दिन लगे रहते । उनकी व्यवसाय की स्थिति और लक्ष्मी की बरसात देख देख कर नगर के कई रईसो के सीने पर सांप लौट जाता था ।

हालांकि इसी यशोगाथा को धुमिल करते कुछ दाग धब्बे भी इस परिवार से जुडे थे। बडा बेटा माधव प्रसाद जो दो साल पहले लड झगड कर अलग हो चुका था , और अपना खुद का स्वतंत्र व्यवसाय कर रहा था । यद्यपि पिता गोकुल प्रसाद ने साफ कर दिया था कि मेरे जिन्दा रहते तो संपत्ति के बंटवारे की कोइ बात भी नहीं होगी |और इसी जीद मे माधवप्रसाद को अब तक कुछ भी नहीं मिला था । लेकिन अब करोडों की संपत्ति परिवार के विवाद का मुख्य मुद्दा होने जा रहा था ।

दरअसल माधवप्रसाद की पत्नी मीनाक्षी भी एक सफल औद्योगिक घराने से ताल्लुक रखती थी । और जब शादी के बाद उसने स्वयं का वर्चस्व पुरे घराने पर जमाना चाहा तो विवाद की शुरुआत हो गई। गोकुलप्रसाद की पत्नी गीता जी ओर दोनो मझले और छोटे बेटों की बहुए तीनों एक हो गई । विवादों का अन्त ये हुआ कि सेठ गोकुलदास को अपने बडे बेटे को स्पष्ट कहना पडा कि अब तुम अपना स्वयं का कारोबार स्वतंत्र रुप से देखो । काफी विवादों एवं झगडों के बाद माधवप्रसाद ने घर परिवार से नाता तोड कर अपना अलग व्यवसाय प्रारम्भ किया । यद्यपि ससुराल के मजबुत सपोर्ट से उसका भी व्यवसाय अच्छा चल निकला । लेकिन जो असुविधा और अपमान के घाव लगे थे वो अभी तक भरे नहीं थे । फिर छोटे भाईयों और उनकी पत्नियों के माँ के साथ रचे जाने वाले कुचक्र के प्रति गहन आक्रोश और असंतोष अभी तक बरकरार था । पिता गोकुल प्रसाद लगभग सन्तुलित थे तीनो बेटो के प्रति । लेकिन छोटे और मध्यम परिवारों की तरह बडे घरानो मे भी महिलाओं की राजनीति ज्यादा मजबुत होती है । गोकुलप्रसाद की पत्नी गीतादेवी और दोनो बहुए मिल कर दो सालों से लगातार कोशिश मेँ थी कि गोकुलप्रसाद अपनी वसियत फायनल कर दे और बडे बेटे को नाममात्र का हिस्सा दे के छुट्टी करे लेकिन गोकुलप्रसाद को बडे बेटे से भी मोह था । वो टालते रहे और मधुमेह की राजसी बिमारी ने उन्हेँ एकदम असमय ही बुला लिया ।

दो दिन पूर्व ही माधवप्रसाद देहरादुन के प्रसिद्ध स्कुल मे बेटी के एडमिशन की प्रक्रिया पूरी कर पाते कि पत्नी मीनाक्षी का फोन मिला ,आप तत्काल सब छोड कर आ जाओ पापा जी नहीं रहे अब आपको पुरे समय वहीं रहना है और हर क्रियाकलाप में मुख्य भुमिका निभाना है ।

मीनाक्षी के पीहर वाले मीनाक्षी के घर आ चुके थे और आगे की संभावनाओं तथा गतिविधियों का आकलन कर रहे थे | माधवप्रसाद तत्काल देहरादुन से रवाना होकर सीधे पिता की हवेली पहूँचे ।मीनाक्षी अपने बेटे के साथ वहाँ पहले से ही मौजुद थी तथा परिवार के अन्य सदस्यों की भांति प्रभावी रुप से शौक संतप्त लग रही थी ।

माधवप्रसाद के वहाँ पहूँचने को किसी ने गम्भीरता से नहीं लिया । बल्कि ऐसे शौक समय में भी दोनो भाईयों और माँ की नजरों मेँ स्वयं के प्रति उपेक्षा और अरुचि का भाव देख कर माधवप्रसाद का आक्रोश और बढ गया । हालांकि पत्नी मीनाक्षी ने पति के सामने सारे बिन्दु स्पष्ट कर दिये थे । मीनाक्षी का कहना था कि वे बिलकुल नहीं चाहेंगे कि तुम बडे बेटे की भुमिका निभाओ । हर काम मे आगे रहो लेकिन तुम्हे प्रभावी ढंग से परिवार के अग्रज होने का रोल निभाना है । तीन सौ पचास करोड के औद्योगिक घराने के प्रथम वारिस होने के नाते तीसरे हिस्से के अधिकार के लिये तुम्हे सबसे आगे रहना है चाहे वे तुम्हे पसन्द करे या ना करे ।

पत्नीभक्त माधवप्रसाद वहाँ पहूँचते ही पुरे शौकमग्न होकर परिवार के सभी सदस्यों के आगे खडे हो गये । गोकुलप्रसाद का मृत शरीर मृत्युपरान्त किये जाने वाले क्रियाकलापों और रस्मोरिवाज के पश्चात अन्तिम दर्शन हेतु हवेली के मुख्य हाल मे रखा जा चुका था । माधवप्रसाद के साथ ही दोनो छोटे भाई भी श्वेत वस्त्रों में पिता के मृत शरीर के सिरहाने शव से नजदिकी बनाते हुऐ शोकसंतप्त मुद्रा मे बैठे थे ।

परिवार के सारे रिश्तेदार और परिचित लोग आ चुके थे । शवयात्रा शुरु होने से पहले परिवार के सदस्यों का रोदन तीव्र हो चला था । पिता के पावों मे सिर झुकाते माधवप्रसाद भावुक होकर वास्तव मे जोरो से रो पडे । तभी उनके कानों मे छोटे भाई की फुसफुसाती आवाज गूँजी बस करो भय्या इतना नाटक मत करो दो साल से तो कभी खबर नहीं ली पापा की अब ढोंग कर रहे हो । माधवप्रसाद क्या बोलते । तभी पीछे बैठी मीनाक्षी का धीमा स्वर गुंजा देवर जी इन दो साल की छोडो इसके पहले के दस साल इन्होने ही पापाजी को सुख दुख मे पुरा साथ दिया है ।

छोटा भाई इस बात का जवाब देता तभी गोकुलप्रसाद की पत्नी गीताजी की शोकसंतप्त उदासीन लेकिन जाग्रत नजरों ने सबको घुर कर देखा । सभी एकदम चुप हो गये ।

शव यात्रा प्रारम्भ होने को थी । श्मशान घाट बहुत दुर था अतः तय किया गया कि अगले चौराहे तक शव को कँधा देते हुए ले जायें फिर वाहनों से श्मशान तक जायें । माधवप्रसाद ने पहल की कि वो केश त्याग कर शवयात्रा के आगे अग्नि लेकर चले लेकिन यह तय किया गया कि छोटे बेटे का पुत्र नितीन जो दादाजी को बहुत प्यारा था वही अपने बाल दे और आगे चले । माधवप्रसाद को लगा कि उनके बडे बेटे होने का हक मारा गया । तभी उनको दुसरा झटका लगा अर्थी के अगले दोनो सिरे दोनो छोटे भाइयों ने अपने कब्जे में ले लिये थे ।

मजबुरी मे माधवप्रसाद ने अर्थी के पिछले एक सिरे से अपना कँधा लगाया । यद्यपि बीच बीच में कंधे बदलते रहे , लेकिन दोनो छोटे भाइयों की कोशीश रही कि माधवप्रसाद अर्थी के अगले सिरों को कंधा देते जनता को ना दिखे । शायद उनकी यह सोच थी कि ऐसा करने से पिता की 350करोड की संपत्ती से बडे भाई का दावा कमजोर होगा । वहीं माधवप्रसाद खुद को बडा बेटा होने के नाते परिवार का प्रथम सदस्य जतलाने का कोई अवसर छोडना नहीं चाहता था । तभी माधवप्रसाद के बेटे ने फुर्ती से अर्थी का एक अगला सिरा अपने अंकल से लगभग हथियाते हुए खुद के कंधे पर ले लिया और पिता की ओर नजर डाली माधवप्रसाद तत्काल आगे बढे और पिता की अर्थी के अगले सिरे को अपना कांधा लगा के धन्य हो गये । फिर तो उन्होने शव वाहन के पास जाकर ही अपना कंधा हटाया ।

कुछ सुकुन आया माधवप्रसाद को कि बेटा राहुल भी चतुर हो चुका है । अर्थी को शव वाहन पर चढाया गया तीनो बेटे और कुछ परिजन भी वाहन पर सवार हुए और ये काफिला श्मशान घाट पहूँचा । शव को सर्वप्रथम अग्नि देने हेतु प्रचलित परम्परानुसार उपस्थितों मे से कुछ बुजुर्गों ने आवाज लगाई माधव बेटे पिता को अग्नि दो । माधव आगे बढे चिता को अग्नि देने तभी दोनो छोटे भाई भी आगे आ गये । घोर शोकसंतप्त मुद्रा में उन्होने व्यक्त किया कि वे भी अपने प्रिय पिता की चिता को अग्नि देंगे । यद्यपि माधवप्रसाद के बाद वे भी सहजता से पिता को अग्नि दे सकते थे लेकिन उन्होने संयुक्त रुप से बडे भाई के साथ चिता को अग्नि देना उचित और आवश्यक माना । अग्नि देते हुए चिता की परिक्रमा करते हुए माधवप्रसाद ने दोनो छोटे भाइयों को फुसफुसाते हुए ज्ञान दिया कि ये शास्त्रसम्मत नहीं है । पिता को अग्नि बडा बेटा ही देता है । लेकिन दोनो छोटे भाइयों ने ये ज्ञान लेने से इंकार कर दिया वरन यह भी दर्शा दिया कि भय्या तुम तो दो साल पहले ही पापा की नजरों से दुर हो चुके थे उन्होने तुम्हे अपना बेटा मानने से ही इंकार कर दिया था ।

शवदाह के पश्चात शौकसभा हुई। श्रद्धाँजली प्रहसन में माधवप्रसाद ने अपने पिता को महान कर्मठ उद्योगपति का खिताब देते हुए खुद से पिता की नजदिकियों का जिक्र किया और यह दर्शाने की कोशीश की कि वे अपने बडे बेटे से बहुत स्नेह करते थे । वहीं मझले बेटे ने अपने उद्बोधनमें दर्शा दिया कि बडे भय्या के अलग होने के बाद पापा हम दोनो भाइयों पर आश्रित हो गये थे और हमने उनकी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं का पुरा पुरा ध्यान रखा ।

दाह संस्कार के पश्चात उसी समय तीसरे दिन उठावने का और अगले दिन अस्थी संग्रह का तय किया गया । उठावना गोकुलप्रसाद के अपने निवास पर ही होना है यह सोच कर माधवप्रसाद निराश थे कि इसमे वे कुछ दखल नहीं दे सकते । यद्यपि उनकी इच्छा थी कि उठावना उनके घर पर हो लेकिन ये व्यवहारिक नहीं था । मझले और छोटे दोनो भाई बडे सकुन से थे कि माधवप्रसाद भले ही बडे बेटे हो पर सारे कार्यक्रम उनके निवास पर और उनकी योजनानुसार ही होंगे ।

शाम होते होते बडे घर यानी सेठ गोकुलदास के निवास पर बैठक में तीनो भाई दोनो दामाद ,मामा और कुछ रिश्तेदार विराजीत थे । बैठक मे भी कुछ विचित्र महसुस किया जा सकता था । बैठक के मध्य स्थान मैं दोनो भाई और दामाद ने जगह घेर ली थी मजबुरन माधवप्रसाद को थोडा साइड मैं ही बैठना पडा । सामान्य चर्चा मे

आगे के कार्यों की रुपरेखा भी बनने लगी दुसरे दिन श्मशान घाट जाकर अस्थी संग्रह जिसे बोलचाल की भाषा मे फुल सोरना या सारी सोरना भी कहते हें। जिसके अन्तर्गत शवदाह के दुसरे दिन ठंडी हुइ चिता से हड्डीयां और अन्य अवयव संग्रह कर कहीं भी नदी मे विसर्जन किया जाता है । हर परिवार यह कार्य अपनी श्रद्धा और क्षमतानुसार या तो स्थानिय नदी में या आसपास नर्मदा नदी मैं या उज्जैन जाकर अथवा हरिद्वार जाकर गंगा किनारे संपन्न करते हैं ।

बडे दामाद अचानक पुछ बेठे अस्थी विसर्जन का क्या सोचा है ।

मझले और छोटे दोनो भाई अचकचाये संभवतः वे इस बारे मैं ज्यादा चर्चा नहीं करना चाहते थे ।

जिजाजी कल सुबह 7 बजे अस्थी संग्रह के लिये श्मशान घाट जायेंगे । फिर कुछ अस्थी अवयव लेकर छोटा हरिद्वार चला जायेगा और बाकी अस्थियाँ यहीं नदी में विसर्जीत कर देंगे ।

मझले ने अस्थी संग्रह विसर्जन की यह योजना बताई लेकिन बडे भाई को आधिकारिक रुप से यह नहीं कहा कि भय्या आपको सभी कार्यों में शामील रहना है । अन्य बातों के बाद सभी विश्राम हेतु अपने अपने ठिकानों पर प्रस्थित होने लगे । माधवप्रसाद भी नौ बजे के लगभग अपने घर पहूँचे । बहुत चिन्तित और उदास थे उन्हे लग रहा था सारा महत्व ,सारा श्रेय और जवाबदारी वाली भुमिका दोनो छोटे भाइयों ने हथिया ली है । उन्हे स्वयं की उपस्थिति ज्यादा वजनदार नहीं लग रही थी । वे मानते थे कि खुद की बडे बेटे के रुप मे उपस्थिति और व्यवस्था मे दखल से ही आगे जाकर संपत्ति पर बराबर का हक जताने मैं सहायता मिलेगी ।

मिनाक्षी ने पति से दिन भर की रिपोर्ट ली । वो भी चिन्तित थी कि शव को कँधा देने ,शवयात्रा मैं फोकस पर रहने ,कपाल क्रीया करने तथा उठावने के स्थान व समय की घोषणा करने आदि में उसके पति की कोई प्रभावी भुमिका नहीं रही । खैर हमें कल कुछ खास करना होगा । अस्थी संग्रह ,विसर्जन में कुछ रिश्तेदार भी रहेंगे । हमारा आधिकारिक दखल स्पष्ट दर्शीत होना चाहिये । दोनो पति पत्नी इसी बात के उपाय सोचते सोचते निद्रा के आगोश मैं जा चुके थे । उनकी संतोषजनक निद्रा इस बात का सुचक थी कि वे कुछ खास उपाय भी सोच चुके थे ।

दुसरे दिन प्रातः 6 बजते बजते शौक संतप्त घर के सारे सदस्य जाग चुके थे । अस्थी संग्रह के लिये जाने की तैयारी हो रही थी । अरे भाई माधव जी को भी तो आ जाने दो उनको भी तो साथ में ही चलना है ना । मामा ने उपस्थित लोगों पर नजर डालते हुए कहा ।

मामाजी आप इस बात की चिन्ता ना करें | कल भय्या को बता दिया था | अब या तो उनको यहाँ आ जाना था अभी तक , या हो सकता है वो सीधे वहीं आ जायें ।

अरे बेटा कुछ देर इन्तजार कर लेते हैं ।

मामाजी ऐसे कामों मे किसी का इन्तजार नहीं करते हैं | और वैसे भी उन्हे क्या करना है | सारा काम तो हम दोनो को ही निपटाना है | आप तो जानते ही हैं भइया तो दो साल से बिलकुल अलग ही हो गये थे । मझले बेटे ने सभी उपस्थितों की जानकारी के लिये कुछ उंचे स्वर मैं कहा और तत्काल छोटे ने भी सुर मे

सुर मिलाते हुए सबको एक नई जानकारी देते हुए कहा" हां मामाजी बाबुजी भी बडे भय्या को बिलकुल पसंद नहीं करते थे ।"

मामा का अधिकार भी बस इतना ही दखल देने का था । ठीक है आ जायेगा वो भी चलो ।

और इस तरह 8.10लोगों का ये काफिला बिना बडे बेटे माधव प्रसाद के ही श्मशान की और चल पडा । दोनो भाइयों की यही इच्छा थी कि किसी तरह माधवप्रसाद हाइलाइट ना हो । रुकी हुई बात फिर चली । अबकि बार बडे दामाद बोले भई माधव जी को अब तक तो आ जाना था । ऐसे समय ऐसी लापरवाही ठीक नहीं होती ।

अरे जिजाजी बडे भय्या की इन्ही लापरवाहियों की वजह से ही तो बाबुजी ने उन्हे परिवार के बिजनेस से भी अलग कर दिया था । तब से हम दोनो ही बाबुजी के कंधे से कंधा मिलाकर लगे हुए थे । मझले ने दामाद जी की बातों का रुख अपनी दिशा मैं कर लिया । बाबुजी का मन बडे भय्या की ओर से तभी से हट गया था । और उन्होने तो कह भी दिया था कि माधव अब से तु तेरा काम देख और अपने हिसाब से व्यापार कर । अब इस घर से तेरा कोई लेना देना नहीं । इन लोगों को परेशान मत करना । छोटे ने मानो अन्तिम निर्णय सुना दिया ।

इन्हीं बातों के चलते सभी श्मशान पहूँच रहे थे ,तभी शास्त्री जी , उनके घरेलु पण्डित सामने से अपनी मोपेड पर आते दिखे । दोनो भाई पण्डित जी को सुबह सुबह वहाँ देख चौंके अरे शास्त्री जी आप यहाँ इतनी सुबह ?

बस जजमान आपके काम से ही आया था । कहते कहते शास्त्री जी की मोपेड मझले के पास से गुजरती जा चुकी थी । दोनो भाई कुछ सोच मे थे शास्त्री जी हमारे काम से यहाँ ? हमसे पहलें कुछ समझ नहीं आया । खैर जाने दो हमें क्या करना । अस्थी संग्रह या विसर्जन के लिये पण्डित की कोई जरुरत नहीं पडती है पता नहीं किस काम के लिये यहाँ आया था ये पंडित ?

श्मशान घाट सामने ही था । सभी लोग वाहन से उतरे और चितास्थल की ओर बढे ।

जैसा कि होता है शहरों के श्मशानो पर 4-6 चिताओं के जलाने की व्यवस्था होती है । सभी की नजरें कल किये गये शवदाह वाले स्थान की ओर थी । कुछ असमंजस मे पडे मझले ने छोटे की ओर देखा क्यों छोटे यहीं जलाया था ना चिता को ?

हां भय्या ये दुसरे नम्बर वाली जगह ही तो थी ।

लेकिन यहाँ तो ? सभी की नजरें उस दुसरे नम्बर वाली चिता के स्थान पर थी । वहाँ का दृष्य इन सब की अपेक्षा के विपरीत था जहाँ जली हुई चिता राख और अस्थियों के अवशेष होना थे वहाँ गोबर से लिपा पुता स्थान   आटे के पिण्ड और पुजा की सामग्री नजर आ रही थी ।सभी सोच में डुबे थे भ्रमित थे शायद कोई गलतफहमी हुई है शवदाह का स्थान दुसरा होगा ।

तभी सामने से वहाँ का चौकिदार नाथु आता दिखा । मझले ने तुरन्त उसकी ओर नजरें घुमाइ अरे नाथु भाई कल बाबुजी की चिता यहीं पर .....

हां सेठ वहीं तो हुआ था कल अन्तिम संस्कार ।

तो फिर ये सब क्या है ?

क्या ? अरे वो चिता के अवशेष ,राख ,अस्थियाँ आदि कहाँ है ? हम लोग अस्थी संग्रह के लिये आये हैं ।

परेशान से मझले ने नाथु की आँखों मे आँखे डाल कर पुछा । काफिले के सारे लोग अचम्भीत से थे और सबकी नजरें नाथु के चेहरे पर गढी थी । नाथु के जवाब के इन्तजार में मानो सबकी श्वांस रुक सी गई थी ।

अरे सेठ कैसी बात करते हो वो तो सब हो गया ।

क्या हो गया ? मझले की बेचैनी तीव्रतम स्तर पर पहूँच चुकी थी ।

अरे सेठ अभी अभी तो आपके बडे भय्या गये हैं यहाँ से सब कुछ तो कर दिया उन्होने ।

क्या कर दिया ? छोटा चिल्लाया

कौन आये थे ? मझला दहाडा

क्या ? दोनो दामाद और मामा सभी की आंखे चौडी हो गई थी ।

अरे वो आपके बडे भाई माधव सेठ , उनका बेटा राहुल और कोई पण्डित था । सुबह 6 बजे ही आ गये थे मै तो सोया था घरवाली ने उठाया कि सेठ आये हैं ।

फिर ? दोनो भाई एक साथ बोल पडे ।

फिर क्या उन्होने सारी अस्थियाँ इकट्ठी कर एक थैली मे भर कर अलग रख लिया तथा सारी राख और मटेरियल एक बडे बोरे मे भरकर यहीं नदी में विसर्जीत कर दिया । पुजा पाठ भी करी मुझे कुछ इनाम दिया और अस्थियों की थैली साथ ले गये ।

ओह मझला चीखा तुमने उन्हे रोका क्यों नहीं ।

सेठ जी जी मैं उनको कैसे रोकता ? उनका बाप मरा वो क्रिया करम कर रहें हैं मै रोकने वाला कौन ?

अरे वो नहीं हम हैं उनके असली बेटे और असली वारीस वो नहीं कर सकता ऐसा । दोनो भाई विचलीत हो रहे थे | उन्हे समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या करना चाहिये । देखा मामाजी उसकी करतुत कितना कमीन निकला वो हमारे आने से पहले बाबुजी की अस्थियाँ ले भागा । मझला विलाप करने लगा । बाबुजी को मरने के बाद भी चैन नहीं मिलेगा , बडे भय्या ने यह बहुत अधर्म का काम किया है ।

दोनो दामाद भी हतप्रभ थे | भई ये तो विचित्र काम किया माधव जी ने । बिलकुल गलत है ये तो ।

मामाजी देखा आपने क्या किया भय्या ने । दोनो भाई बडे आक्रोश के साथ मामा के सामने खडे होकर उनसे प्रतिक्रिया चाह रहे थे मानो मामा भी जवाबदार है इस घटना के लिये ।

मामाजी भी विचलित थे क्या कहते । अब मैं क्या बोलुं तुम भाईयों के बीच ।

नहीं मामाजी भय्या को सबक सिखाना ही पडेगा | इस बदतमिजी का जवाब देंगे हम उनको ।

क्या करना अब भय्या ? छोटे ने मझले की ओर देखा ।

चलो उसके घर ,चाहे लडना पडे ,मारना पीटना हो जाये बाबुजी की आत्मा को दुखी नहीं होने देंगे । भय्या से अस्थियाँ लेकर हम ही उनकी शान्ती क्रिया करेंगे । मामाजी चलिये आप भी हमारे साथ ।

और ये घनघोर आक्रोशित काफिला फिर चल पडा न्यु कालोनी मे बने माधवप्रसाद के बंगले की ओर । वाहन बहुत तेजी से रास्ता काट रहा था और वाहन से तेज चल रहा था दोनो भाईयों का दिमाग । आगे क्या करना है यही घुम रहा था दिमाग में ।

छोटे , आज तो भाईसाहब से सारा हिसाब साफ कर लेते हैं ।

भइया उनकी नजर अपनी प्रापर्टी और बिजनेस पर है उनकी कोशिश होगी कि वो खुद को परिवार का मुखिया साबित करे और जायदाद मेँ से बराबरी का बल्कि ज्यादा से ज्यादा हिस्सा हडप ले ।

अरे हम उनकी चाल सफल नहीं होने देंगे माँ भी तो हमारे साथ है ।

इसी तरह की आक्रोश भरी बातें करते हुए सब लोग माधवप्रसाद के बंगले के सामने पहूँच चुके थे ।बडा गेट बन्द था चौकिदार बाहर ही स्टुल लगाकर बैठा था ।

दोनो भाई मेन गेट खोलते हुए अन्दर जाने लगे तभी चौकिदार ने रोका ‘ साबजी घर पर कोई नहीं है ‘ । क्यों ? कहां गये भाईसाहब ?

पता नहीं मालिक और मालकिन तो सुबह से ही बाहर हैं । राहुल बाबा भी कहीं बाहर निकल गये हैं । अन्दर कोई नहीं है ।

ओफ ! दोनो भाईयों की परेशानी आसमान छुने लगी । दोनो दामाद और मामा भी किंकर्तव्यविमुढ से खडे दोनो भाईयों को देख रहे थे | हालांकि अब उन्हे दोनो की ये बेचैनी और आक्रोश जरा भी नहीं सुहा रहा था ।

देखो छोटे अब हमको दो काम करना है एक तो भाईसाहब को खोजते है वो शहर मे ही कहीं छुपे होंगें और दुसरे अभी चलते हैं पुलिस स्टेशन ।

पुलिस थाना ! क्यों ? मामाजी चौंके दोनो दामाद भी चकराये वहाँ क्या होगा ?

तुम चलो तो टी आई अपना खास है उससे राय लेते हैं । इस तरह किसी मृत की चिता से अस्थियाँ गायब कर देना भी तो चोरी मेँ आता है हम भय्या के नाम की रिपोर्ट डालेंगे ।

अरे बेटा ये ठीक नहीं होगा मामाजी ने संकोच जताया । लोग क्या कहेंगे ?

कुछ भी कहें मामाजी बाबुजी की आत्मा की शांती के लिये मैं कुछ भी करने से पीछे नहीं हटुंगा । तुम चलो तो सही । और फिर दोनो भाई पुरे जोश खरोश से तथा बाकि दोनो दामाद एवं मामा दिग्भ्रमित से पुलिस थाने की ओर चल पडे ।

टी आई भदोरिया इस काफिले को थाने में प्रवेश करते देख आश्चर्य में पड गया ।

उसे भी जानकारी थी कि सेठ गोकुलदास की मृत्यु हो गई है ऐसे मैं ये लोग यहां कैसे ? क्या हुआ सेठ इधर कैसे ? टी आई गम्भीर था ।

अरे भदोरिया जी क्या कहें बडे शर्म की बात है पर कहना पड रहा है , एक चोरी की रिपोर्ट डालना है और तत्काल कार्यवाही भी करना है ।

चोरी किसके यहाँ ? कब ? टी आई चौंका । दरअसल क्या बताऐ मझला और छोटा दोनो सोचने लगे और दोनो क्या बाकि लोग भी सोच रहे थे कि क्या रिपोर्ट लिखवायी जायेगी । कुछ क्षणों के पश्चात मझले ने दिमाग मे अपनी बात को तार्किक बनाते हुए कहा भदोरिया जी हमारे मृत पिताश्री के अस्थी अवशेष की चोरी हो गई है आज श्मशान घाट से ।

क्या ? अस्थी अवशेष की चोरी ? भदोरिया की आँखें खुली की खुली रह गई । क्या कह रहे हो यार अब ये मरे हुए आदमी की हड्डीयों को कौन चुरायेगा ? क्या अपने इलाके मैं कोई हड्डी चोरों का गिरोह भी सक्रीय हो गया है ?

कोई गिरोह नहीं सर | सर ये चोरी तो हमारे घर के लोगों ने की है , और चुराने वाला और कोई नहीं हमारा बडा भाई ही है ।

क्या ? माधव सेठ ?

जी हाँ वही ।

क्या बात करते हो यार मेरी तो कुछ समझ मे ही नहीं आ रहा ।

मैं बताता हूँ छोटे ने आगे बढकर टी आई को कुछ विस्तार से बताया । अरे पर वो तो खुद बडा बेटा है वो क्यों बाप की अस्थियाँ चुरायेगा ?

उनको हरिद्वार ले जाकर विसर्जन करने के लिये ।

तो इसमे क्या गलत है यार ? इसमैं चोरी की क्या बात है ? ये तो होता ही है ।

सर आप नहीं समझ रहे दरअसल बाबुजी ने बडे भय्या को दो साल पहले ही घर से निकाल दिया था । उनका अब हमारे परिवार से कोइ ताल्लुक नहीं । हमने कल बाबुजी का अन्तिम संस्कार किया था और आज सुबह हम अस्थियाँ विसर्जन के लिये श्मशान घाट पहूँचे उसके पहले ही भाईसाहब वहाँ चुपचाप जाकर अस्थियाँ चुराकर गायब हो गये ।

तो वो गायब क्यों हो गये ?

अरे वो हमसे डरे होंगे कि हम उनसे अस्थियाँ वापस ना छुडा लें । मझले ने झुंझलाकर टी आई को कुछ उंचे स्वर में बोला ।

यार सेठ मेरी तो समझ से बाहर है बाप मरा है और बेटे ने उसकी अस्थियां संग्रह कर नदी में विसर्जित कर दी या कहीं ओर ले गया तो इसमे गलत क्या हुआ ?

गलत ये हुआ कि उसको ये अधिकार ही नहीं था ये कर्तव्य हमारा था हम करते ।

अब उसको अधिकार था या नहीं था ये तो कोई कानूनी मुद्दा ....खेर आप तो ये बताओ कि मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ इस मामले में ?

आप भय्या के विरुद्ध अस्थि चौरी की रिपोर्ट लिखिये और उनको खोजीये ।क्या ? अस्थि चोरी की रिपोर्ट ? सेठ मेरे नालेज मेँ ऐसी कोई कानुनी धारा ही नहीं है जो इस बात के लिये लागु हो फिर रिपोर्ट कैसे लिखेंगे ?

आपको कुछ तो करना होगा सर । अच्छा हम किन्ही अज्ञात लोगों द्वारा चौरी की गई ऐसा बताऐं तो ? भदोरिया ने उपाय बताया । नहीं सर पुरे प्रमाण हैं श्मशान के चौकिदार का कथन है भय्या ही पण्डित के साथ आये और पुजा पाठ करके अस्थियां ले गये । आप भय्या के नाम से ही रिपोर्ट डालो ।

ऐसा मैं नहीं कर सकता प्लीज ।

मतलब आपसे हमें कोई हेल्प नहीं मिलेगी इस मामले में ?

अच्छा चलो मैं 5-7 जवान लगा कर माधव सेठ को खोजने की कोशीश कर सकता हूँ उनका पता लगा कर तुम्हे बता दुंगा , फिर आगे का काम तुम्हारा । ठीक है तुम ये तो पता लगाओ हम देखते हैं आगे क्या करना है ।

बडी देर से मामाजी इस बहस को परेशान होकर सुन रहे थे | बेटा अब ये सब छोडो पहलें घर चलो वहां इत्मीनान से सोचना क्या करना है । और फिर कल के उठावने की भी तय्यारी करना है ।

ये कहते हुए मामाजी दोनो भाईयों की पीठ पर हाथ रखते हुए उन्हे थाने के बाहर ले चले।

टी आई भदौरिया अपनी कुर्सी पर बैठा सर पकडते हुए इन लोगों को जाते देख रहा था उसे अब भी समझ नहीं आया था कि आखिर मामला क्या है ।

थके हारे खिलाडीयों का ये कारवाँ वापस अपने घर की ओर जा रहा था । घर वाले भी

परेशान थे कि सुबह सात बजे से गये सब लोग अभी तक क्यो नहीं आये ।

घर पहुंचते ही दोनो बेटों ने माँ को बडे भाई की करतुत बताई माँ भी विलाप करने लगी । कुछ अन्य बुजुर्ग महिलाऐ भी उस रुदन में साथ दे रही थी । उनके विलाप में जिस बात को बार बार

दोहराया जा रहा था वो ये थी कि कलयुगी बेटा बाप को मरने के बाद भी चेन नहीं लेने दे रहा है । मेरे स्वामी की मुक्ति कैसे होगी ना जाने कहाँ रखे होंगे अस्थी अवशेष ?

इसी प्रकार विलाप प्रलाप के चलते दिन बिता । अगले दिन दोपहर तक माधवप्रसाद का कहीं पता ना था । उनके घर पर भी अभी तक कोई नहीं पहुंचा था । घडी का काँटा बारह पार करते ही उठावने की तैयारी होने लगी । तभी एक भुचाल आया । एक बडे वाहन में बडा बेटा माधवप्रसाद पत्नी मिनाक्षी अपने बेटे बेटी के साथ उतरे साथ में माधवप्रसाद के ससुराल पक्ष के लोग भी थे । पांडाल में बैठे दोनो भाइयों और दामादों की भृगुटि तन गई थी । बाहर से आने वाले मेहमान और नगर के सभ्रांत लोग आना शुरु हो गये थे

माधवप्रसाद भी अपने मित्रों और ससुराल पक्ष के लोगों के साथ दोनो भाईयों और दामादों के नजदिक बैठे थे । तभी मझले भाई से रहा नहीं गया बडे आक्रोशीत स्वर में वो पुछ ही बैठा कहाँ गायब थे भय्या आप चोरों की तरह ?

तुम्हे क्या मतलब ? मैं कहाँ था और चोर होंगें तुम जरा तमीज से बात करो ।

बाबुजी की अस्थियाँ चुरा ले गये आपको शरम नहीं आई ?

अस्थियाँ चुराई नहीं मैने बाकायदा पुजा पाठ करके अस्थी संग्रह की है ।

अब कहाँ है अस्थियां ? छोटा भी तेश में आ चुका था ।

वो सब व्यवस्था मैने कर ली है बाबुजी का सारा काम मैं अच्छी तरह से करुंगा ।

बाबुजी के सारे कार्य तुम नहीं हम करेंगे हम ही उनके वारिस हैं ।

तुमसे पहले मैं हूँ उनका बडा बेटा उनका प्रथम वारिस समझे । माधवप्रसाद चीखे तभी महिलाओं की ओर से माँ का चित्कार गूँजा अरे मेरे पति की अस्थियां कहाँ ले गये रे कैसे होगा उनका उद्धार ?

माताजी आप बिलकुल चिन्ता ना करें । अस्थियां लेकर आपका पोता हरिद्वार के लिये रवाना हो चुका है । उठावने के बाद मैं भी हरिद्वार जाकर वहाँ विधीविधान से पूरा तर्पण विसर्जन करुंगा । यह सुनना था कि दोनो भाई सकते मे आ गये । बाबुजी की अस्थियां हरिद्वार रवाना हो चुकी है ? बाबुजी के अन्तिम कार्यों मे बडे भाई का दखल उनको सीधे सीधे परिवार की संपत्ती के बंटवारे पर बढता दबाव महसुस हो रहा था ।

अचानक छोटा भाई जोरों से रोने चिखने लगा भैया तुमने अच्छा नहीं किया चौरी से अस्थियां ले गये अब तुम्हारा इस घर पर कौइ हक नहीं । बाबुजी ने दो साल पहले तुमको घर से निकाल दिया था । अब तुम यहाँ से भी जाओ यहाँ तुम्हारी कोई जरुरत नहीं ।

जरुरत कैसे नहीं बाप था वो मेरा , बडा बेटा हूँ मैं इस घर का । बारहवें तक इस घर मैं रहुंगा सारे उत्तर कार्य करुंगा इसके बाद सकल पंच की बैठक बुलवाकर अपना हक लुंगा । तुम्हारी मनमानी नहीं चलेगी समझे । माधवप्रसाद एक सांस मे अपना सारा इरादा बता चुके थे ।

दोनो भाईयों का क्रोध भी चरम पर था ।अगला घटनाक्रम हाथापाई का ही होना था तभी मामा और दामादों ने बिचबचाव कर तीनो को समझाया । वहाँ उपस्थित समाज के सारे गणमान्य और रिश्तेदार आश्चर्यचकित होकर यह घरेलु सरफुटव्वल देख रहे थे । धीरे धीरे वे भी दो भागों मे विभक्त हो रहे थे। कुछ माधवप्रसाद के पक्ष मे तो कुछ शेष परिवार के पक्ष मे ।

तभी माधवप्रसाद के श्वसुर जो स्वयं एक बडे उद्योगपती भी थे ने निर्णायक स्वर में उंची आवाज मे माधवप्रसाद को समझाया अभी 12दिनों तक कोइ विवाद ना करें दामाद जी । बाबुजी के सारे कार्य निपटायें । फिर समाज के हम सब लोग बाकायदा बैठ कर आप लोगों का मामला सुलझायेंगे ।किसी के साथ अन्याय नहीं होगा । अब उठावने का समय हो गया है सब शान्त हो जाओ। माधवप्रसाद एक विजयी मुस्कान लिये अपने स्थान पर बैठ चुके थे वहीं दोनो भाई बैचेन आहत कुछ पराजीत से महसुस कर रहे थे । महिलाओं के बीच बैठी माधवप्रसाद की पत्नी मिनाक्षी संतुष्ट थी उनके चेहरे पर अपनी योजना सफल हो जाने के भाव थे ।

स्वर्गीय सेठ गोकुलदास की विधवा पत्नी गीताजी असमंजस में थी । शौक करे गुस्सा हो या

शांत बनी रहे । और उठावने मैं सम्मिलित होने आये कुछ लोगों मे फुसफुसाहट जारी थी सब माया का खेल है । कौन बेटा कौन भाई सब दौलत के दिवाने हैं । भगवान बचाये ऐसी दौलत से